"बीते हुए कल से दुखों
का सैलाब ही बहा,
आने वाले कल ने भी
सुखों का बहिष्कार कर दिया,
बर्बादी पहुंच रही अपने मौत
रूपी मंजिल की ओर,
इस तम्बाकू की लत ने
कैसा ये हाल कर दिया...
Powered by Triple Camera 2022.12.06 11:57